[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3444

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मानव जीवन में संगीत की उपादेयता

किशोर एरंडे
सहायक प्राध्यापक (राजनीति शास्त्र)
शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्ना.कन्या महा. इन्दौर

समस्त ललित कलाओं में संगीत का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके अध्ययन और अभ्यास से मनुष्य लौकिक तथा अलौकिक दोनों सुख प्राप्त करता है। मानव जीवन संगीत से ओत–प्रोत है। मनुष्य ज्ञान शील प्राणी है। अतः उसे संगीत से विशेष आनन्द प्राप्त होता है। मानव जीवन सदा संगीत से अनुप्राणित होता रहता है। मानव जीवन नाना प्रकार के उत्थान–पतन, हर्ष विवाद तथा राग द्वेष आदि द्वन्द्वात्मक भावों का केन्द्र होता है। जहाँ एक ओर जीवन की जटिल समस्यायें मनुष्य को चिन्तित करती रहती है। वहाँ दूसरी ओर संगीत मनुष्य की सारी चिन्ताओं का निराकरण करता रहता है।

मानसिक तथा शारीरिक व्यथा से आक्रान्त होकर जब मनुष्य अति व्यस्त हो जाता है तो मन की उध्दिग्नता को शान्त कर पुनः सशक्त बनाने की क्षमता एक मात्र संगीत में ही है। समाज को सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित बनाने में संगीत का विशेष योगदान है। मनोगत भावो को सजीव और साकार रूप देकर उसे अत्यन्त आकर्षक और रंजक बनाने का एकमात्र कार्य संगीत का ही है। संगीत से साक्षात विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं। परमात्मा से लेकर देव, दानव, मनुष्य, पशु एवं समस्त जड़ चेतन संगीत की मधुर स्वर लहरो से आंदोलित हो जाते हैं।

संगीत से केवल मनोरंजन ही नहीं अपितु धर्म भी होता है। वैदिक काल में राजसूर्य जैसे महान यज्ञों में संगीत का प्रयोग किया जाता था। मंत्रों का उच्चारण भी संगीतात्मक होता है। उदात्त, अनुदात्त और स्वरित आदि तत्वों का उल्लेख वेदों में मिलता है। जिन मंत्रों का उच्चारण इन तत्वों को उपेक्षित करके किया जाता है वे मंत्र अशुद्ध माने जाते हैं। सृष्टि के स्वर्णिम विहान से लेकर प्रलय की काली संध्या तक संगीत का अस्तित्व स्वीकार करना ही पड़ता है।

भावुकता से हीन कोई कैसा भी पाषाण ह्रदय क्यों न हो, किंतु संगीत से विमुख होने का दावा उसका भी नहीं माना जा सकता। कहावत है कि गाना और रोना सभी को आता है। संगीत की भाषा में जिन व्यक्तियों ने अपने विवेक, अभ्यास और तपश्चर्या के बल से स्वर और ताल पर अपना अधिकार कर लिया है, उसका विज्ञ समाज में आदर है, उन्हें बड़ा गायक समझा जाता है। परन्तु अधिकांश जनसमूह ऐसा होता है, जो इस ललित कला की साधना और तपस्या से सर्वथा वंचित रह जाता है। ऐसे व्यक्तियों को गायक नहीं कहा जाता और न वे गायक कहलाने के पात्र ही होते हैं। परन्तु गाना ऐसे लोग भी गाते हैं, इन लोगों के जीवन का संबंध भी संगीत प्रचुर मात्रा में होता है। गाँवों में गाए जाने वाले लोक–गीतों के विभिन्न प्रकार; कपड़े धोते समय धोबियों के गीत, भीमकाय पाषाणीं एवं भारी वस्तुओं को उपर चढ़ाते समय श्रमिकों का गाना, खेतों में पानी देते समय किसानों द्वारा गाए जाने वाले गीत, पशु चराते समय ग्वालों का संगीत प्रथा नाव चलाते मल्लाह का गीत इस कथन की पुष्टि के यथेष्ट प्रमाण हो, किसी विशेष अवसर पर विवाह अथवा संतान के जन्मोत्सव पर अथवा किसी धार्मिक या सार्वजनिक समारोहों के अवसरों पर होने वाले कार्यक्रम तो गीत और नृत्य से परिपूर्ण होते ही हैं।

पावस की लाजवंती संध्याओं की श्वेतश्याम मेघ–मालाओं से प्रस्फुटित नन्ही–नन्ही बुंदों का रिमझिम–रिमझिम राग सुनते ही कोयल फूक उठती है, पपीहे गा उठते है, मोर नाचने लगते हैं तथा मंजीरे बोल उठते हैं। लहलहाते हरे भरे खेतों को देखकर कृषक आनंद विभोर हो जाता है और वह अनायास ही अलाप उठता है किसी परिचित मल्हार के बोल। यही वह समय होता है, जबकि प्रकृति के कण–कण में संगीत की सजीवता भासमान होती है। दुःख से सुख से, सदन से हास से, योग से वियोग से, मृत्यु से जीवन से, सारांश यह है कि जीवन की प्रत्येक अवस्था से संगीत की कड़ी अवश्य जुड़ी रहती है।

प्रसन्नता की बात है वर्तमान में विश्व के कुछ विशेषज्ञ एवं डाक्टर संगीत के रहस्यपूर्ण तत्वों के अनुसंधान में संलग्न है। मानसिक रोगों पर एवं पक्षाघात पर संगीत की स्वर लहरियों ने आशातीत लाभ किया है।

भारतीय संगीत साहित्य में तानसेन से सम्बन्धित कई चमत्कारिक किवदात्तियाँ है, जिनमें से दीपक राग द्वारा दीपक जला देना, मेघ राग द्वारा वृष्टि कराना और स्वर के प्रभाव से हिरण आदि पशुओं को बुला लेना मुख्य रूप से प्रचलित है। इसी

प्रकार ग्रीक साहित्य में आरफेन्स का वर्णन मिलता है जो संगीत के प्रभाव से चराचर जगत को हिला देता था, समुद्र की उत्ताल तरंगों को शांत कर देना था और वायु के वेग को रोककर पर्वतो को गति दे सकता था।

संगीत का चरम लक्ष्य है ईश्वर की प्रप्ति। मनोरंजन उसका गौण रूप है। मनोरंजन के द्वारा क्षणिक आनन्द की प्राप्ति होती है, और ईश्वर की प्राप्ति से आनन्द की अनुभूति होती है। दोनो दृष्टिकोणों से मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण होता है, मनोरंजन की प्रवृत्ति आनन्द तत्व की खोज की परिचायिका है। अतः जो व्यक्ति संगीत के लक्ष्य को सीमित मानता है अर्थात् उससे केवल मनोरंजन चाहता है वही धीरे–धीरे उपासना की ओर अग्रशित होता है।

संगीत कला के सदुपयोग से ही मानव व्यक्तित्व का निर्माण होता है। उसके दुरूपयोग से व्यक्ति का विनाश हो पाता है। व्यक्तित्व निर्माण के लिये देश, काल और पात्र का यथार्थ ज्ञान अनिवार्य है। उपयुक्त देश और काल में तथा उपयुक्त पात्रों के समक्ष संगीत का प्रदर्शन करना समीचीन होता है। जो संगीतज्ञ ऐसा नहीं करता और सर्वत्र तथा सभी समय में अपनी कला का प्रदर्शन करता है, उसकी प्रतिष्ठा नहीं होती अतः यह स्पष्ट है कि संगीत से व्यक्तिव का और व्यक्तित्व से संगीत का निर्माण होता है।

संदर्भ –

1. *संगीत विशारद – 'वसंत'*
2. *केला संसार – सम्पादक–शेख रियाजउद्दीन पटेल*
3. *संगीत शास्त्र विज्ञान – पन्नालाल मदन*
4. *भारतीय संगीत का इतिहास – रामअवतार वीर*
5. *संगीत शास्त्र पराग – गोविन्दराव राजूरकर*
6. *सुरप्रवीण – रोबिन चटर्जी सुरसेन*
7. *भारतीय संगीत में शोध प्रविधि – अलका नागपाल*
8. *भारतीय संगीत शिक्षा समस्याएं एवं समाधान – डॉ. अलकनंदा पलनीरकर*
9. *संगीत की पारिभाषिक शब्दावली – डॉ. जतिन्द्रसिंह खन्ना*
10. *संगीत निबंधावली – लक्ष्मीनारायण गर्ग*
11. *संगीत निबंधमाला – पं. जगदीश नारायण पाठक*
12. *म.प्र. के संगीतज्ञ – प्यारेलाल श्रीमाल*